

s. u. मम्, गृणान्; गृणीये 1. sg. — med. öfters mit pass. Bed. गृणीये als 3. sg. pass. Die Form गृणीते 2. pl., welche sich AV. 5, 27, 9 findet, ist für fehlerhaft zu halten. Naigh. 3, 14. Nir. 3, 5. गीर्ण. Vgl. auch गुर und ग्र. 1) *anrufen, rufen*: अग्रिं देवो योतत्रै नौ गृणीमसि RV. 8, 60, 15. त-मया धिया गृणे 1, 143, 6. गोभिः 9, 9. मतिभिः 7, 78, 2. अरुसा 1, 177, 5. कृ-वसा 64, 12. 7, 97, 3. कृता गृणीते 1, 79, 12. गृणन्ति विप्र ते धियः 14, 2. गृणाति कृ वा एतद्वाता यच्छसति ÇAT. Bā. 4, 3, 2, 1. गृणीमसि विषे रुद्रस्य नाम RV. 2, 33, 8. 1, 48, 4. 10, 84, 5. इन्द्रं गृणीय उ स्तुये 8, 54, 5. 2, 20, 4. विश्वा स्तोत्र-यो गृणते च सत्तु 7, 3, 10. 5, 87, 6. वार्यमग्ने गृणान् आ भर 16, 5. अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानः 4, 9. गृणन्तमरुत उरुष्य 1, 58, 8. 9. गृणानः सोमपीतये AV. 17, 1, 10. केचिद्भोताः प्राञ्जलयो गृणन्ति BHAG. 11, 24. देव-माराधयच्छर्व गृणन्त्रह्य सनातनम् MBH. 7, 1754. RAGH. 10, 64. यन्नाम वि-वशा गृणन् BHAG. P. 1, 1, 14. — 2) *ankündigen, anpreisen*: तं ते मदं गृ-णीमसि वयणम् RV. 8, 15, 4. अस्मे धत्त ये च रूतिं गृणन्ति 4, 34, 10. 17, 5. 7, 36, 18. *verkünden, erzählen*: तस्य जन्म मरुद्वर्ष कर्माणि च गृणीहि नः BHAG. P. 1, 4, 9. — 3) *lobend nennen, beloben, preisen*: स अग्रिषा व-सुर्गणे RV. 5, 6, 2. इवो यः सुव्रतगृणे 8, 33, 5. 27, 8. 39, 1. सत्यः सो अस्य महिमा गृणे 3, 4. 51, 8. तत्तद्देस्य वास्यं गृणीमसि 1, 155, 4. तमिदं गृणी-मसि 33, 2. 6, 44, 4. तमीशान् वसवो अग्रिं गृणीषे 7, 6, 4. 10, 122, 1. सक्त-सामाग्रिंविशिं गृणीषे 5, 34, 9. भूरेदतारं सत्पतिं गृणीषे स्तुतस्त्वं भेषजा रास्यस्मे 2, 33, 12. गृणाद्यः = स्तुतिं कुर्वद्यः BHATT. 8, 77. गीर्ण gepriesen BHAR. zu AK. 3, 2, 59.

— अनु mit dem dat. P. 1, 4, 41. 1) *lobend einstimmen*: पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति RV. 1, 147, 2. (तस्मै) अन्वगृणात्कपिः stimmte ihm bei Vop. 3, 15. गृणाद्यो अनुगृणाति BHATT. 8, 77. — 2) *antworten*: ओ कृतस्तथा कृ-तरित्याचक्षणे अनुगृणाति ÇĀNKH. ÇA. 10, 13, 28. 16, 1, 27. क्षेत्रे अनुगृणाति d. i. कृता प्रथमं शंसति । तमध्वयुः प्रोत्साहयति P. 1, 4, 41, Sch. — 3) *nach-erzählen, wiederholen*: लीलाकथास्तव — विरिञ्च्यगीताः — अनुगृणन् BHAG. P. 7, 9, 18.

— अप s. अपगर्, अपगारम्.

— अपि s. अपिगीर्ण.

— अभि 1) *beifällig zurufen; einstimmen in (acc.); begrüßen, prei-zen*: इमा वाचमभि विश्वे गृणतः VS. 2, 18. अभि ये त्वा स्तोमैर्गृणन्ति वक्रयः RV. 5, 79, 4. 41, 19. अभि ये देव्यार्दातगृणन्ति 7, 38, 4. एहि स्तोमा अभि स्वरभि गृणीक्या हव 4, 10, 4. न पूषणं मेयामसि सुक्तरभि गृणीमसि 42, 10. प्रदक्षिणदभि गृणन्ति कार्वः 2, 43, 1. तं (हरिं) भक्तिभावो ऽभ्यगृणादसव-रम् BHAG. P. 4, 9, 5. गीर्भिश्चाभ्यगृणात् 3, 21, 12. — 2) *gutheissen, wohl-gefallig aufnehmen, genehmigen*: अभि पज्ञं गृणीहि नः RV. 1, 13, 3. 10, 15, 6. स कृता यस्य रोदसी चिडुर्वी यज्ञं यज्ञमभि वृधे गृणातः 3, 6, 10. तां त्वा विश्वे अभि गृणन्तु देवाः VS. 14, 4, 2. RV. 10, 139, 5. 7, 2. 47, 8. 49, 11. 1, 100, 17. KAUC. 42. उक्त्वा वा यो अभिगृणाति राधसा RV. 1, 34, 7. 48, 14. श्रुष्टो दक्षमभि गृणीहि राधः 2, 9, 4. — Vgl. अभिगर्.

— आ *Beifall zollen, loben*: यमा चिद्विश्वे वसवो गृणन्ति RV. 7, 38, 3. आ ये विप्रसो मतिभिर्गृणन्ति 10, 6, 5. आ यस्य ते महिमानं गोभिर्गृणन्ति कार्वः 8, 46, 3.

— प्रत्या *antworten*: अध्वर्युस्तस्मिंस्तिष्ठन्प्रत्यागृणाति ÇĀNKH. ÇA. 17, 4, 6. 14, 3.

— उप *anrufen, lobend zurufen*; mit dem acc.: उप ये त्वा गृणन्ति व-

क्रयः RV. 1, 48, 11. उप घेदेना नमसा गृणीमसि 2, 34, 14.

— प्र *ankündigen, anpreisen*: प्र मित्रे धाम वरुणे गृणतः RV. 1, 152, 5. *besingen, preisen*: न यदचश्चित्रपदं (subj.) कर्यशो (obj.) जगत्पवित्रं प्रगृणीत कर्हिचित् BHAG. P. 1, 3, 10. जनेषु प्रगृणात्स्वेवं पृथुम् 4, 22, 1.

— संप्र *benennen*: यदेवैनाः संप्रगीर्य कृत्रा इत्याचक्षते तं समाः AIR. Bā. 6, 13.

— प्रति mit dem dat. P. 1, 4, 41. 1) *anrufen, begrüßen*; mit dem acc.: प्रति वो मूर् उदिति मित्रं गृणीषे वरुणम् RV. 7, 66, 7. प्रति भीमधिर्जरते समिद्धः प्रातः विप्रसो मतिभिर्गृणतः 78, 2. — 2) *antworten* (im Wech-selruf oder Gesang): शंसोवाध्वो प्रति मे गृणोहि RV. 3, 53, 3. उक्थंशा इत्याह प्रातःसवनं प्रतिगीर्य TS. 3, 2, 9, 1. AIR. Bā. 3, 38. ओ कृतस्तथा कृतारित्यध्वयुः प्रतिगृणाति 3, 25, 7, 19. ÅCV. ÇA. 10, 6. ÇAT. Bā. 4, 3, 2, 1. 6, 7, 2, 1. KĀTJ. ÇA. 9, 13, 29. 13, 3, 1. प्रतिगृण्यन् 19, 5, 7. ओमित्यध्वयुः प्रतिगर् प्रतिगृणाति TAITT. ÇP. 1, 8. क्षेत्रे प्रतिगृणाति P. 1, 4, 41, Sch. — 3) *Jmd (dat.) beistimmen*: प्रत्यगृणातस्मै लक्ष्मणः Vop. 3, 15.

— अभिप्राति = प्रति 2. TS. 3, 2, 9, 5.

— सम् 1) *einstimmen, zusagen, versprechen*: न सध्यमिन्द्रा ऽमुन्वता सं गृणीते RV. 4, 25, 7. यददास्यन्नम उत संगृणामि AV. 6, 119, 1; vgl. 71, 3. Nach P. 1, 3, 52 und Vop. 23, 44 in dieser Bed. stets med. und zwar mit der Präsensform संगिरते, welche auf 2. ग्र zurückgeführt wird. Wir haben die beiden Wurzeln wegen ihrer grundverschiedenen Be-deutungen streng auseinandergehalten und lieber ein Ueberspringen in eine andere Präsensbildung (vgl. 2. ग्र unter नि und सम्) als in eine durchaus nicht zu vermittelnde Bedeutung annehmen wollen. Zum Wechsel der Formen mag das auf 1. ग्र zurückgehende Wort गिर mit Veranlassung gegeben haben. राज्ञे संगिरताम् — इति *zusagen* DAÇAK. 79, 5. वसून् देशाश्च निवर्तयिष्यन्नाम नृपः संगिरमाण एव BHATT. 3, 8. यथास्वं संगिरते स्म गोष्ठीषु स्वामिनो गुणान् *einstimmen in* 8, 31. संगीर्ण *versprochen* AK. 3, 2, 58. H. 1489. — 2) *preisen*: समगृणान्युतम-ष्टभोगैः BHAG. P. 3, 14, 45. — 3) *einen Ausspruch thun*: समगिरत् DAÇAK. 78, 13. — 4) *med. einstimmend nennen*: मन्दाक्राताम् — तां संगिरते (v. l. संवदति, ÇAUT. (Bā.) 42.

— अभिसम् *zusagen, versprechen*: विश्वे तदेवा अभिसंगृणन्तु KAUC. 115.

2. ग्र (गृ), गिरति DHĀTUP. 28, 117. (गिरति AV. 6, 135, 3 sehr befrem-dend) und गिलति P. 8, 2, 21. ÇAT. Bā. 1, 8, 4, 3. MBH. Suçr. Die Form गृणाति s. u. नि und सम्. गिरते MBH. 3, 1760. जगार; अजीगर, अगारोस्, 3. pl. गरन्; reflex. गिरते, अगोष्ठ Vop. 24, 12. गोष्ठी, गिरति, गिलति. Nir. 6, 8, 9, 4. 1) *verschlingen* DHĀTUP. यद्विरामि सं गिरामि AV. 6, 135, 3. आदि-क्षसिष्ठ ओषधीर्जीगः RV. 1, 163, 7. न मो गरन्त्यः 138, 3. जगः नृं प्रत्यक्षं जगार 10, 28, 9. 27, 13. 31, 10. 58, 5. KĀND. UP. 4, 3, 6. अपानं गिरति प्रा-णः प्राणं गिरति चन्द्रमाः । आदित्यो गिरते चन्द्रमादित्यं गिरते परः ॥ MBH. 3, 1760. अतो हि शस्त्रमगिलत्किलैकः 2, 2193. जगधं गीर्णं वातम् AIR. Bā. 3, 46. भयगीर्णघोष BHAG. P. 9, 10, 13. गिलति (गिरति RĀJAM.) *verschlungen* AK. 3, 2, 60. — 2) = ग्र mit उद् *aus dem Munde entlas-sen*: (हरिर्नारायणः) ओंकारमुद्गिरन्वक्तात्सावित्रो च तद्वयम् ॥ शेषेभ्य-श्चैव वक्त्रेभ्यश्चतुर्वेदान्गिरन्वहन् MBH. 12, 12872. — caus. गारित P. 6, 4, 52, Sch. — intens. जेगित्यते P. 8, 2, 20. Vop. 20, 5. — desid. जिगारि-यति P. 7, 2, 75. Vop. 19, 7.